प्रातः क्लास 1-5-1968 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बनी बनाई अनादि सृष्टि चक्र अनुसार कल्प पहले माफिक शिव भगवानुवाचः अभी अपना परिचय तो बच्चों को मिल गया है। बाप का परिचय भी मिल गया है। बेहद के बाप को भी जान लिया और बेहद की सृष्टि के आदि मध्य अन्त को भी जान लिया नम्बरवार/अनुसार। पुरुषार्थ कोई अच्छी रीत जान जाते हैं, जो फिर समझा भी सकते हैं। कोई अधूरा कोई कम। जैसे लड़ाई में भी कोई कमान्डर चीफ, कोई कैप्टन कोई क्या बनते हैं। राजाई के माला में भी कोई शाहूकार प्रजा कोई गरीब प्रजा नम्बरवार होते हैं। अभी बच्चे जानते हैं बराबर हम खुद श्रीमत पर श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ राजधानी की स्थापना कर रहे हैं। जितनी2 जो मेहनत करते हैं उतनी2 बाप से अपना प्राईज़ लेते हैं। आजकल शान्ति के राय देने वाले को प्राईज़ मिलती है। तुम बच्चों को जो प्राईज़ मिलती है वह उनको नहीं मिल सकती। उनको तो हर चीज़ अल्प काल लिए मिलती है। जिस बाप के श्रीमत पर राजधानी स्थापन करते हैं सो भी 21 जन्म 21 पीढ़ी लिए। पीढ़ी की गैस्टी है। वहां कब बचपन में वा जवानी में काल खाता नहीं। यह भी जानते हो न मन न चित था हम ऐसे स्थान पर आकर बैठे हैं जहां तुम्हारा यादगार भी खड़ा है। जहां 5000 वर्ष पहले भी सर्विस की थी। दिलवाला मंदिर, अचल घर, गुरु शिखर। ********** मदगुरु भी ऊंच ते ऊंच तुमको मिला है। जिसका यादगार बनाया हुआ है। अचल घर का भी राज़ समझ गये हैं। वह हुई गुरु की महिमा। यह अचल घर। तुम ऊंच ते ऊंच पद पाते हो पुरुषार्थ से। तुम कोई समय लिख सकते हो, अभी नहीं। कोई समय लिखेंगे चैतन्य दिलवाला, चैतन्य अचल घर, चैतन्य गुरु शिखर। जब जास्ती सेना तुम्हारी बढ़ेगी तब यह तुम लिखेंगे। अभी तुम लिखो तो हंगामा मचादेंगे। नहीं तो यह है वन्डरफुल। जड़ तुम्हारा यादगार है। वहां ही चैतन्य तुम आकर बैठे हो। यह सभी रूहानी कारोबार जो कल्प पहले चली थी उनका पूरा यादगार यहां है। नम्बरवन यादगार है यह। फिर यादगार हैं राजधानी अर्थात सम्राज्य का। जैसे कोई बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो उनको अन्दर में खुशी, रौनक आ जाती है। फर्निचर-पोशाक आद कितने अच्छे रखते हैं। परन्तु तुम तो विश्व के मालिक बनते हो। तुमसे कोई बराबरी कर सकेंगे। यह भी स्कूल है। पढ़ाने वाले को भी तुम जान गये हो। भगवानुवाचः भक्ति-मार्ग में जिसको सिमरते हो, पूजा करते हो, परन्तु कुछ भी पता नहीं पड़ता है। बाप ही प्रत्यक्ष आकर सभी राज़ समझाते हैं। क्योंकि यह सभी यादगार पिछाड़ी के अवस्था की बनती है। जब रिजल्ट निकलती तब भी तो रिजल्ट नहीं निकली है। जब तुम्हारी अवस्था सम्पूर्ण बन जाती है उनका फिर भक्ति-मार्ग में यादगार बनता है। जैसे खड़ी बन्धन का यादगार होता है। जब पूरी/पक्की खड़ी बांधहम अपना राज्य-भाग्य ले लेते हैं। कच्चा में नहीं। जब पक्के हो जाते हैं तब यादगार बनते हैं। अभी तुम बच्चों को पता पड़ गया है भक्ति मार्ग में तो कुछ भी पता नहीं था। इस समय तुम जानते हो। सभी मंत्रों का भी अर्थ समझाया। ओम का अर्थ कोई लम्बा-चौड़ा नहीं है। ओम अर्थात हम आत्मा भ्रम शरीर। अज्ञान काल में तुम देह-अभिमान में आते हो तो अपन को शरीर समझ लेते हो। दिन प्रति दिन भक्ति मार्ग नीचे गिरता जाता है। तमोप्रधान बनता जाता है। हर चीज़ पहले सतोप्रधान होती है। भक्ति भी पहले सतोप्रधान थी। जब एक सत्य शिव बाबा को याद करते थे। थे भी बहुत थोड़े। फिर दिन प्रति दिन वृधि होती जाती है। विलायत में जो जास्ती बच्चे पैदा करते हैं उनको ईनाम मिलता है। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। सृष्टि की तो इतनी वृधि हो गई है। अभी पवित्र बनना है। तुम बच्चों को सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान तो मिल गया है। यह समझते हो सिवाय बाप के कोई भी ज्ञान दे न सके। सतयुग में साधु सन्त महात्मा आद का नाम होता ही नहीं। अभी तो भक्ति की कितनी धूमधाम हो गई है। मेले मलाखड़े पर कितने लाख मनुष्य जाते हैं। वहां यह मेले मलाखड़े आद होते ही नहीं। मनुष्य दुःखी होते हैं तब मेले-मलाखड़े भी लगते हैं। तो मनुष्य जाकर दिल बहला आवे। तुम्हारी दिल तो बाप ऐसी बहलाते हैं 21 जन्म लिए जो तुम सदैव बहलते ही रहते हो। कहां भी मेले मलाखड़े आद में जाने का कब ख्याल नहीं आता। मनुष्य कहां भी जाते हैं सुख के लिए। पहाड़ों पर भी जाते हैं सुख के लिए। तुमको

वहां तो पहाड़ों पर भी जाने की दरकार नहीं। वहां तो सदैव बसन्त मौसम रहती है। 5तत्व भी तुम्हारी में वा अदब खड़े रहते हैं। ऐसे नहीं कि गर्मी और सर्दी में मनुष्य मर जावे। यहां तो देखो कैसे मनुष्य मरते रहे हैं। मनुष्य तो सतयुग कलियुग स्वर्ग-नर्क को भी नहीं जानते। भूल गये हैं। बहुत समय हो गया है ना तो उसका ज्ञाननहीं हैं। तुम बच्चों को तो पूरा ज्ञान मिला है। ऐसे भी बाप नहीं कहते हैं कि मेरे साथ ही तुमको रहना है नहीं। तुमको तो अपना परिवार भी सम्भालना है। बच्चे तो सभी हैं, जरूर बच्चे बाप के पास ही रहने चाहिए। बच्चे तो जुदा न तब होते हैं जबकोई खिट-पिट होती है। यहां तो खिट-पिट की कोई बात नहीं। फिर भी तुम बाप के साथ रह नहीं सकते हो। ऐसे भी नहीं कि सभी रह सकते हैं या सभी सतोप्रधान बन सकते हैं। ज्ञान मार्ग में भी कोई सतोप्रधान, कोई सतो कोई रजो कोई तमोप्र× अवस्था में भी हैं। सभी इकट्ठे रह थोड़े ही सकेंगे। यह राजधानी बन रही है। जो जितना2 बाप को याद करते हैं। मुख्य बात है ही बाप को याद करने की। बाप स्वंय बैठ कर ड्रील सिखलाते हैं। यह है डैड सायलेन्स। तुम यहां जो कुछ देखते हो उनको देखना न है। देह सहित सारी दुनिया का त्याग करना है। बड़ी भारी मंजिल है। यह तो सभी कुछ विनाश होना है। और ज्ञान नेत्र से तुम जो देखते हो वही रहना है। क्या तुम देखते हो? एक तो अपने घर को और पढ़ाई अनुसार तोपद पाते हो उस सतयुगी राजाई को भी ये तुम जानते हो। जबसतयुग है तो त्रेता नहीं त्रेता है तो द्वापर नहीं। द्वापर है तो कलियुग नहीं। अभी कलियुग भी है और संगम युग भी है। मल. तुम बैठे उसी ही पुरानी दुनिया में हो परंतु बुधि से समझते हो हम संगम युग पर हैं। संगम युग किसको कहा जाता है यह भी तुम समझे हो। पुरुषोत्तम संगम युग या वर्ष इसमें ही होगा। पुरुषोत्तम वर्ष पुरुषोत्तम मास पुरुषोत्तम दिन भी इसी पुरुषोत्तम संगम पर ही होते हैं। पुरुषोत्तम बनने को पुरुषोत्तम घड़ी भीपुर×इस पुरुषोत्तम संगम युग में ही हैं। यह बहुत छोटा लिप युग है। तुमलोग बाजोली खेलते हो ना। यह तुम बाजोली पहनते हो। यह हैयोगबल की बातें। जिस से तुम स्वर्ग में जाते हो। बाबा ने देखा है कई साधु×मन्त्रमीर सन्यासी ऐसे बाजोली करते यात्रा पर जाते हैं। साराप्र× सो कर फिर उठ खड़े हो फिर सोते हैं। ऐसे निशान डालते बाजोली करते तीर्थों पर जाते थे। बड़ी कठिनाई दिखाते हैं×तीर्थों पर जाने की। अभी इसमें तो कोई कठिनाई की बात नहीं। याद की यात्रा तुम बच्चों कोकठिन लगती है। नाम तो बहुत ही सहज रखा है ? मनुष्य कहां से कहांसुन कर डर न जावे। कहते हैं बाबा हम योग में रह नहीं सकते हैं। बाप फिर हल्क[illegible] देते हैं। यह है बाप की याद। सन्यासियों ने इसको योग अक्षर दे दिया है। बाप कहते हैं योग आद अक्षर भूल जाओ। सिर्फ याद करना है। याद तो सभी चीज़ को किया जाता है। अभी बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। तुम बच्चे हो ना। तुम जो सतोप्रधान थे सो तुम अभी तमोप्रधान बने हो कितनी सिम्पुल समझानी है। तुम्हारा बाप भी है माशुक भी है, सभी आशुक उनको याद करते हैं। एक बाप अक्षर ही काफी है। भक्ति मार्ग में तुम मित्र सम्बन्धियों को याद करते फिर भी हे ईश्वर हे प्रभु जरूर कहते हैं। सिर्फ पता नहीं है कि वह चीज़ क्या है। यह भी कहते हैं आत्माओं का बाप परमात्मा है। इस शरीर का बाप तो शरीरधारी ही है। आ× आत्माओं का बाप अशरीरी है। वहकब पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। और सभी पुनर्जन्म में आते हैं इसलिए बाप को ही याद करते हैं। जरूर कब सुख दिया है उनको कहा भी जाता है दुःख हर्ता सुख कर्ता। परंतु उनके नाम रूप देश× देश काल को नहीं जानते। जितने मनुष्य उतनी बातें। अनेक मत हो गई है। सर्वव्यापी की भी मत निकाली है गीता से। परंतु बाप ने तो कहा नहीं है। बाप कहते हैं मेरी बनाई हुई गीता नहीं है। यह तो भक्ति मार्ग में बनाई है। बाप कितना प्रेम से बैठ पढ़ाते हैं। वह है ही रूहर शान्ति देने वाला। उनमें ताकत है। कितनाउन से सुख मिलता है। और कोई से इतना सुख नहीं मिलता। एक ही गीता का भगवान गीता सुना कर पतित से पावन बना देते हैं। प्रवृति मार्ग भी चाहिए ना। तुम्हारी बुधि में है निवृति-

ती एक जैसे नहीं होते हैं। न सभी को एक जैसा पार्ट है। हरेक का अपना2 पार्ट है। इसका नाम ही है वेश्यालय। कितना बार काम चिक्षा पर चढ़े हैं। कितना बार दलदल है। बुद्धि को पतित कर देती है। यहां आकर बाप से शिक्षा लेने वाले भी फिर ऐसे बन जाते हैं। माया गठर में डाल देती है। यह है ही रौरव नर्क। रात दिन यही धंधा करते हैं। वेश्यालय को उठाने की कोई की ताकत नहीं है। जो कि आफीसर लोग ही ऐसे काले कारनामे हैं। तो उठावेंगे फिर कैसे। दुनिया की हालत बहुत बिगड़ी हुई है। सिवाय बाप के याद कि नहीं अंधों की लाठी बन नहीं सकती है। इसलिये सूरदास की कहानी है। है तो सुनाई हुई बात। दृष्टान्त देते हैं। वह इतना अन्धा था जो सर्प को रस्सी समझ ऊपर चढ़ा। अभी सर्प को कैसे हाथ लगावेंगे। यह एक मिसाल बनाया है। सर्प पर चढ़ गया। फिर वेश्या ने टोका। यह क्या! तुमको पता नहीं पड़ता है। विषय विकार के पिछाड़ी इतना अंधा बन गये हो। तब उनको गुस्सा लगा और आंखें निकाल दीं। बाप कहते हैं सभी हैं अंधे के औलाद अंधे। अरे तुम बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। अज्ञान माना अंधियारा कहते हैं ना तुम अज्ञानी अंधे हो। अरे ज्ञान है गुप्त। इसमें कुछ बोलने का नहीं है। एक सेकण्ड में सारा ज्ञान आता है। सबसे सहज है ज्ञान। फिर भी अन्त तक माया की परीक्षा चलती रहेगी। 4-6 आनाभी मुश्किल अवस्था ठहरती है। इस समय तो तूफान के बीच में हैं। पक्के हो जायेंगे फिर इतना तूफान नहीं आयेगा। गिरेंगे नहीं। फिर देखना तुम्हारा झाड़ कितने बढ़ता है। नामाचार तो होना ही है। थोड़ा दिनका होगा तो फिर बहुत हुशियार रहेंगे। फिर बाप की याद में एकदम चटक जायेंगे। समझेंगे टाईम बहुत ही थोड़ा है। बाप तो बहुत अच्छा समझाते हैं। आपस में बहुत ही प्यार से चलो। आंखें न दिखाओ। क्रोध का भूत आने से एकदम शिकल ही बदल जाती है। तुम को तो ऐसी (ल0ना0 शक्ल वाला बनना है ना। एमआबजेक्ट सामने है। सा0 पिछाड़ी होता है जबकि ब्रह्मा होते हैं। पहले कुछ मैं तुमको दिखाया था। श्रीकृष्ण का कैसे सा0 होता है। उस समय सभी माल तुम्हारे पास थी। कैसे दान में आते थे। अभी वह एक भी नहीं है। वह पार्ट पूरा हो गया। उस समय तो कोई डरते थे कोई बिल्कुल ही नहीं डरते थे। भागने वाले भाग गये। फिर वहां नजदीक आ गये तो कितने भागे। तुमको बाप ने कितना खुशी में रखा। कितनी पार्ट दिखाते हैं* थे। फिर पिछाड़ी में बहुत पार्ट देखेंगे। तुम बहुत खबरदार रहेंगे। निरा मोत तुम्हारा पिछाड़ी में बहुत सीन सीनरी देखते रहेंगे। तब तो फिर पछतावेंगे भी ना। हमने यह यह किया। फिर सजा भी बहुत कड़ी मिलती है। बाप आकर पढ़ाते हैं उनकी भी इज्जत न रखें तो सजा मिलेगी। सभी से सजा उनको मिलेगी जो विकार में जाते हैं या शिव बाबा की बहुत ग्लानी करने निमित्त बनते हैं। माया तो जबरदस्त है। बिगड़ते हैं तो फिर एकदम ट्रेटर बन पड़ते हैं। स्थापना में सा0 बना होता है। तुम तो अभी ना बनते हो ना। सतयुग में असुर आदि होते ही नहीं। यह संगम युग की ही बात है। असुर लोग कितने भी होते हैं। बच्चों को कहते हैं शादी जरूर करो। स्त्री को विकार के लिये कितना कहते हैं। कितना सामना करते। कहते हैं सन्यासी भी न रह सके। यह फिर कौन है जो पवित्र रह दिखाते हैं। आगे चल करके भी जरूर। बाप पवित्रता के देवता तो बन नहीं सकते। तुम समझते हो हमको इतनी प्राप्ती होती है तब थोड़ा है। शास्त्रों को तो मिला कुछ भी नहीं है। भगवानुवाच काम जीते जगत जीत ऐसा ल0ना0 बनेंगे तो बच्चे नहीं पवित्र बनेंगे। फिर माया भी बहुत पछाड़ती है। ऊंची पढ़ाई ना। बाप आकर पढ़ाते हैं। धन्धा सुधरण अच्छी रीत बच्चे तो करते हैं तो फिर माया थप्पर लगा देती है। माया अवज्ञाएं भी बहुत कराती है। फिर उनका हाल होता है। माया ऐसी बेहाल बना देती है, अहंकार में ले आती है बात तक पूछो। नम्बरवार राजधानी बनती है तो कोई गुण से बनेंगे ना। अभी तो फास्ट परजेन्ट फ्युचर का सारा ज्ञान मिलता है। तो कितना अच्छीरीत ध्यान देना चाहिए। अहंकार आया और वह गया। माया एकदम बंध नाटक पैनी बना देती है। बाप की अवज्ञा हुई फिर बाप की याद कर न सके। अच्छा मोटे2 सिकीलधे रहनी बच्चों को सहनी बाप दादा का यादप्यार गुडमार्निंग। हां बच्चे को सहनी बाप भी नमस्ते।

तो आद
हमारी
द में
मको